PAGE NO. :
DATE : / /

Dat - 24/04/2021
नाम- रामू प्रसाद (Assistant Prof.)
कॉलेज- T.M.A.T.T.C. Hasigram
Sub. - B.d. of Biological Science
Class - B.Ed. (First year)

अन्वेषण विधि के पद
(Teaching Steps of Heuristic Method)

(1) समस्या का प्रस्तुतीकरण :- इसमें सर्वप्रथम जैविक विज्ञान-शिक्षक किसी समस्या को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है और उसके सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी भी कराता है।

2.) तथ्यों की खोज (Search of Facts)
छात्र समस्या से सम्बन्धित तथ्यों की खोज करते हैं, उन्हें संकलित करते हैं। जैविक विज्ञान-शिक्षक उसमे छात्रों की शंकाओं का समाधान करता है और सहयोग करता है।

3.) परिकल्पनाओं का निर्माण (formation of Hypothesis)
प्राप्त तथ्यों के आधार पर छात्र समस्या के समाधान के लिए अनेक अनुमान लगाते हैं. इसे ही परिकल्पना निर्माण कहते है।

(4) परिकल्पनाओं का परीक्षण : (Testing of Hypothesis)
इसके पश्चात हल निर्मित परिकल्पनाओं की तथ्यों के आधार पर सत्यता सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।

5) निगम / निष्कर्ष निकालना
परिकल्पनाओं के परीक्षण में जो परिकल्पनाएं सत्य सिद्ध नहीं होती हैं, उन्हे छोड़ दिया जाता है और जो परिकल्पनाएं सत्य सिद्ध हो जाती हैं, उन्हें स्वीकार कर लिया जाता है यही उनके अन्वेषण का निष्कर्ष होता है। निष्कर्ष के रूप में नियम या सिद्धान्त का निर्धारण किया जाता है।

अन्वेषण विधि के गुण :
1) यह विधि छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करती है।
2) यह विधि क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर आधारित है इसमें छात्र स्वयं क्रिया करके खोज करते हैं।
3) इस विधि से अध्ययन में छात्रों में अनुसन्धान की प्रवृत्ति विकसित होती है।
4) इस विधि द्वारा ज्ञानार्जन में छात्रों के आत्म-विश्वास में अभिवृद्धि होती है।
5) इस विधि में छात्र किसी नियम / सिद्धान्त की खोज करना किसी समस्या का हल स्वयं खोजते हैं। इससे प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।

PAGE NO. :
DATE : / /

6.) यह विधि छात्रो में अनुशासन बनाये रखने में सहायक है क्योंकि इस विधि में छात्र अपने कार्य में संलग्न रहकर खोज करते हैं।

अन्वेषण विधि के दोष (Demerits of Heuristic Method)

1.) यह विधि निम्न स्तर के छात्रों के लिए उपयोगी नहीं है। क्योंकि निम्न स्तर पर छात्रो का मानसिक विकास नवीन ज्ञान की खोज के अनुरूप नहीं हो पाता है।
2.) यह विधि समय के दृष्टि से भी मितव्ययी नहीं है क्योंकि इस विधि से अन्वेषण में छात्र समय एवं शक्ति अधिक नष्ट करते हैं।
3.) यह विधि आर्थिक दृष्टि से अधिक खर्चीली है। क्योंकि इसमें छात्र अन्वेषण के समय पर बहुत सी सामग्री खराब करते है।
4.) इस विधि द्वारा भौतिक विज्ञान की समग्र विषय-वस्तु का शिक्षण सम्भव नहीं है। केवल कुछ प्रकरणों का ही इस विधि द्वारा शिक्षण किया जा सकता है।
5.) इस विधि में छात्रो द्वारा गलत निष्कर्ष निकाले जाने की सम्भावना सदैव बनी रहती है।
6.) इस विधि में शिक्षक पर अधिक उत्तरदायित्व रहता है।